385 P
61
H

राष्ट्रीय अभिलेखागार पुस्तकालय
NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
भारत सरकार
Government of India
नई दिल्ली
New Delhi

आह्वानांक Call No.
अवाप्ति सं० Acc. No. 385

491.431
N17D

देशभक्तों के गीत

IMPERIAL RECORD
1 APR. 1932
Reg. No...............
DEPARTMENT.
102
102

सरस्वती आश्रम, अनारकली, लाहौर ।

देशभक्तों के गीत

जो काँग्रेस के जलसों तथा जलूसों
में गाए जाते है।

मिलने का पता—

सरस्वती आश्रम, अनारकली, लाहौर।

पहलो बार दो हज़ार] [मूल्य एक आना

सत्येन्द्रनाथ द्वारा रावी फाइन आर्ट प्रिंटिंग वर्क्स अनारकली लाहौर में मुद्रित

NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
No 385
Date 8.12.71
GOVT. OF INDIA

देशभक्तों के गीत

(१) झंडा नहीं झुकेगा

भारत के लालने जब ऊपर इसे उठाया।
आज़ादी का संदेसा कुल मुल्कको सुनाया।
जय-जयका शोर इसके चारों तरफसे आया।
हर एक बाह्याके दिल में यही समाया।
झंडा नहीं झुकेगा ! झंडा नहीं झुकेगा !!
अपनी स्वतन्त्रतापर सर्वस्व वार देंगें।
घटने न देशका पर अपनेऽधिकार देंगें।
क़ौमी निशानपर हम होने न वार देंगें।
दुश्मनको देखते ही बस यह पुकार देंगें –
झंडा नहीं झुकेगा ! झंडा नहीं झुकेगा !!
क़ुर्बान तन है इस पर, इसपर निसार मन है।
समझे हुए इसीको हम अपना धर्म-धन हैं।
सायेमें इसके हाज़िर सब अपने हमवतन हैं ;।
हिन्दू हैं या मुसलमां, सिख हैं कि क्रिश्चियन हैं।
झंडा नहीं झुकेगा ! झंडा नहीं झुकेगा !!
ग़द्दार भाग जाऐं, वह अब न मुँह दिखायें।
अपनी गवां रहे हों इज्ज़त तो वह गवायें।
परवा नहीं ज़रा भी आयें बलाएँ आयें।

जितने उठा सकें वह कितने यहां उठायें।
झंडा नहीं झुकेगा! झंडा नहीं झुकेगा!!
सायेमें इसके हम सब यकजान हो चुके हैं।
आज़ादीके हमारी सामान हो चुके हैं।
इसके हज़ार हमपर एहसान हो चुके हैं।
लाखों जवान इस पर कुर्बान हो चुके हैं।
झंडा नहीं झुकेगा! झंडा नहीं झुकेगा!!
स्वाधीनता-पताका, आज़ादीका अलम है।
प्राणों प' आ बनेगी किसको यहां प' ग़म है?
दम-ख़म है किसमें ऐसा कर सकता कौन ख़म है?
जबतक कि जां में जां है जबतक कि दम में दम है।
झंडा नहीं झुकेगा! झंडा नहीं झुकेगा!!
छोड़ा है मौतका डर तो किससे अब डरेंगे?
आगे बढ़े हैं अब क्या पीछे क़दम धरेंगे?
सीनेपै ज़ख्म खाकर हर्गिज़ न उफ़ करेंगे।
जूझे भी तो यही हम कहते हुए मरेंगे–
झंडा नहीं झुकेगा! झंडा नहीं झुकेगा!!

(२) गांधी टोपी वालोंने

इक लहर उठादी भारतमें, इन गांधी-टोपी वालोंने।
स्वाधीन बनो–यह सिखा दिया, इन गांधी-टोपी वालोंने॥
सदियोंकी गुलामीमें फंसकर, अपनेको थे जो भूल चुके।

कर दिया सचेत उन्हें अब तो, इन गांधी-टोपी वालोंने ॥
सर्वस्व देशहित कर दो तुम, अर्पण, सपूत हो माताके।
सर्वस्व त्याग-ये मंत्र दिया, इन गांधी-टोपी वालोंने ॥
अनहित में भारत-माता के, जो लगे देशद्रोही बनकर।
उनको सतपथ पर चला दिया, इन गांधी-टोपी वालोंने ॥
पट बन्द हुए कितनी मिलके, लंकाशायर भी चीख़ उठा।
चरखेका चक्र चलाया जब, इन गांधी-टोपी वालोंने ॥
रोते हैं विदेशी व्यापारी, औ सिर धुन धुन चिल्लातेहैं।
खद्दरसे प्रेम किया जबसे, इन गांधी-टोपी वालोंने ॥
आदर्श जो हैं इस भारतके, दीनोंके प्रान-पियारे हैं।
नेता गांधीको बना लिया, इन गांधी-टोपी वालोंने ॥
"अब मेल करो आपसमें तुम, ज़ंजीर गुलामीकी तोड़ो-"
मनवाया गांधीका कहना, इन गांधी-टोपी वालोंने ॥
हैं विकट समस्या देशकी जो, उनको भी हल करना होगा।
साधन बस एक निकाल लिया, इन गांधी-टोपी वालोंने ॥
युवकों के हृदय-दुलारे हैं, आंखोंके प्यारे तारे हैं।
चुन लिया जवाहरको राजा, इन गांधी-टोपी वालोंने ॥
खुश हुआ है ये सुन-करके जी, स्वाधीन बनेगा भारत अब।
विश्वास दिलाया ऐसा ही, इन गांधी-टोपी वालोंने ॥

(३) विदेशी न लाओ पिया।

अबतो खादीसे प्रेम बढ़ाओ पिया।
कही मानो विदेशी न लाओ पिया ॥ टेक।

शेर—अब विदेशी वस्त्रसे मुझको भी नफ़रत हो गई।
देशकी सम्पत विदेशों में बहुतसी ढो गई।
ज़रा भारतकी दौलत बचाओ पिया ॥ कही०
अब स्वदेशी वस्त्रसे अपना शरीर सजाइये।
और मेरे वास्ते सारी स्वदेशी लाइये।
मुझे खादीकी चादर ओढ़ाओ पिया ॥ कही०
दीन-दुखियोंका यही दुख दूर कर सकती पिया।
गर्व भी परदेशियोंका चूरकर सकती पिया॥
लाज अंगों की मेरे बचाओ पिया ॥ कही०
जब तलक ज़िन्दा रहें तनपर रहे देशी बसन।
बाद मरनेके उसीका चाहिये हमको कफ़न।
यह संदेसा सबोंको सुनाओ पिया ॥ कही०
चाहते हो देशकी गर कुछ भलाई तो 'दिनेश'।
तुम स्वदेशी वस्त्र पहनो कर स्वदेशी ही सुवेश।
वीरता आप अपनी दिखाओ पिया ॥ कही०

(४) खादी डंका

खादीका डंका आलममें बजवा दिया गांधी बाबाने।
मैनचेस्टर-लंकाशायर को हिलवा दिया गांधी बाबाने।
देशी वस्त्रोंको पहनो तुम, दो छोड़ विदेशी कपड़ोंको—
यह पाठ भली विधिसे हमको पढ़वा दिया गांधी बाबाने।
देशी धोती, गांधी टोपी, खादीका कुरता औ धोती;
ओढ़ना-बिछौना खादीका करवा दिया गांधी बाबाने।

मनहूस विदेशी कपड़ोंकी जलवादी भारतमें होली ;
शुभचलन स्वदेशी खादीका चलवा दिया गांधी बाबाने
जो पहन सारियां परदेशी चलती थीं भारत की नारी ;
खादी से उनका सुँदर तन सजवा दिया गांधी बाबाने।
सिरसे पैरों तक है खादी, खादीके श्वेत समुंदरसे-
है आज ज़मानेके दिलको दहला दिया गांधी बाबाने।
खादीकी भक्ती बमसे भी है अधिक काम करनेवाली ;
खादी का गोला भारतको दिलवा दिया गांधी बाबाने।
अब त्याग वि .शी वस्त्रोंको पहनो 'दिनेश' सादी खादी ;
खादीका झंडा भारतमें गड़वा दिया गांधी बाबाने।

(५) आग पानी में।

गिलासोंमें जो डूबे फिर न उभरे ज़िन्दगानी में।
हज़ारों बह गये इन बोतलों के बन्द पानीमें,
न कर बरबाद अपनी ज़िन्दगी बोतलके दीवाने ?
मिला है ज़हर शरबतमें, छुपी है आग पानी में।
यह दारू का पियाला मौतका कड़वा पियाला है ;
वह काटेगा बुढ़ापेमें जो बोएगा जवानी में।
यह क़ातिल जिस्मको बेकार अख़िरकार कर देगी।
चलेगी क्या घड़ी दम ही न होगा जब कमानीमें ?

(६) हिन्दू-मुसलिम-एकता

क्या हुआ गर मर गये अपने वतनके वास्ते ?

बुलबुलें कुर्बान होती हैं चमन के वास्ते।
तर्स आता है तुम्हारे हालपै ऐ हिन्दियो !
गैर के मोहताज हो अपने कफनके वास्ते।
देखते हैं आज जिसको शाद है, आज़ाद है;
क्या तुम्हीं पैदा हुए रंजोअलम के वास्ते ?
दर्दसे अब बिलबिलाने का ज़माना हो चुका।
फिक्र करनी चाहिये मर्ज़ें कुहनके वास्ते।
हिन्दुओं को चाहिए अब कस्द काबे का करें।
और फिर मुसलिम बढ़ें गंगोजमन के वास्ते।

(७) कदी नहीं हरना

बंगाली देवी श्रीमती सरला देवी चाध रानी बी०ए० ने यह गीत अमृतस्वर कांग्रेस में गाया था —

कदी नहीं जे हारना भावें साडी जान जावे
असीं नहीं जे हारना भावें साडी जान जावे"

बिजली ते अग कोलों
पानी तूफ़ान कोलों
हतेरी भूचाल कोलों—कदी नहीं जे हारना"

तोप तलवार कोलों
गोलियां दी मार कोलों
खंडे दी धार कोलों—कदी नहीं जे हारना

कुड़की नीलामी कोलों
सख्त कलामी कोलों
फांसी कालेपानी कोलों—कदी नहीं जे हारना"

माझे दे ज़ोर नाल
मालवे दे शोर नाल
प्यारे प्यारे बोल नाल—कदी नहीं जे हारना"

देश नूं बचावना,
धर्म नूं बचारना
प्राण भी गंवावना—भावें साडी जान जावे"

(८) चक्की चलाउंगी

जो कुछ पड़ेगी मुझपै मुसीबत उठाऊंगी ।
खिदमत करूंगी मुल्क की और जेल जाऊंगी ।
घर भर को अपने खादी के कपड़े पिन्हाऊंगी
और इन विदेशी लत्तों को लूका लगाऊंगी ।
चरखा चला के छीनूँगी उनकी मशीनगन
आदाए मुल्को क़ौम को नीचा दिखाऊंगी ।
अपनी स्वदेश-बहिनों को ले लेके साथ में,
भट्टी पै हर कलाल के धरना बिठाऊंगी ।
जाकर किसी भी जेल में कूटूंगी रामबांस,
और कैदियों के साथ में चक्की चलाऊंगी ।

(९-१०) हुन करलै तयारी ना

खद्दर—आके हिन्द विच तूँ कमज़ाते, पाई सख्त ख्वारी नी।
एडी सोहनी तूँ बनके आयों, लागें सब तूँ प्यारी नी ॥

लट्ठे खासे मलमल आम, आंदे हिंद विच तुहियों तमाम।
किधरे छबी पई उड़ावे, पावे शोर अक्तारी नी ॥

मलमल—वे मैं बुरा की दस कमा, आके हिंदियां ताईं बनाया।
कड नरकों स्वर्ग बिच पाया, कीतो आन वेदारी वे।

मैंनूँ निक्के बड़े सब चाहन, हिन्द दी ख़लकत सारी वे॥
तूँ की मथ्था मेरे नाल जोढ़े, खद्दर ज़ात तवारी वे॥

खद्दर—देखीं हुन तूँ मेरे रंग, बिच महात्मा जी दे जंग।
तेरा खरांगा कक़िया तंग, हुन तूँ करलै तयारीं नी। पाई-सख्त

मलमल—वे तूँ मैंनूँ की रोब दिखावें, ऐवें बाहर आये तों आवें।
कड अखां की लाल दिखावें, आके बिच होशियारी वे ख०

खद्दर—नीं तूँ निकल एथों हुन बाहर, मिनतां तेरियां करा हज़ार
लै लई बहुत तूँ मौज बहार, हुन ते मेरी वारीं नीं। पाई

मलमल—लुटां लख मैं मौज बाहर, तैनूँ दस की चुमन ख़ार
तेरियां मैं मिनतां करां हजार, घर बिच या त ख्वारी वे ख०

खद्दर—नीं हुन तूँ चुकलै बिसतरा बोरी, तैनूँ गल सुनावां कोरी
नहीं ते नसना पैसी चोरी, करके देव तैयारी नी॥ पाई स०

(११) तकदीर जवाहिर की

बूढ़े भी जरा देखें तदबीर ज़वाहिर की ।
चमकी है जवानी में तक़दीर ज़वाहिर की ।

बेचैन हुए क्या क्या बेदर्द भी सुन सुन कर,
किस दर्द में डूबी है तक़दीर जवाहिर की ।

दारा की भी दाराई कुर्बान न हो क्यों कर ?
इस वक्त सिकन्दर है तकबीर जवाहिर की ।

चुभ चुभ के कलेजे में तड़पाने लगी दिलको,
नश्तर से नहीं कुछ कम तफसीर जवाहिर की ।

कुहराम है दुनिया में, हल चल है जमाने में,
सौ रंग दिखायेगी तदबीर जवाहिर की ।

रक्खे हुए है सर पर वह ताज सदारतका,
हो इस से जियादा क्या तौक़ीर जवाहिर की ।

इनआम है ऐ 'बिस्मिल, यह मुल्क की खिदमत का,
हर दिल में उतर आयी तसवीर जवाहिर की ।

(१२) वीर जवाहर ने

भारतका डंका आलम में बजवाया वीर जवाहर ने ।
स्वाधीन बनो स्वाधीन करो—समझाया वीर जवाहर ने ।
वह लाल जो मोतीलाल का है, है लाल दुलारा भारत का ।

सोते भारत को हठ कर के, जगवाया वीर जवाहर ने ॥
अंगरेजोंकी मृगतृष्णा में, भूले थे भारतवासी सब ।
पूरी आजादी का मन्तर सिखलाया वीर जवाहर ने ॥
घोंटी है राजनीति उसने, छानी है खाक विदेशों की ।
समता स्वतन्त्रता का मारग, दिखलाया वीर जवाहर ने ॥
पूँजीपति जमींदार करते हैं जुल्म मजूर किसानों पर ।
बन साथी दीनों का, धीरज धरवाया वीर जवाहर ने ॥
एक गहरी आग धधकती है आजादी की उस के दिल में ।
जिस से युवकों का मुर्दा दिल चमकाया वीर जवाहर ने ॥
आदर्श चरित से वह अपने युवकों का है सम्राट् बना ।
आजादी का ऊंचा झण्डा, फहराया वीर जवाहर ने ॥
बिजली है वाणी में उस की, जादू है आंखों में उस की ।
देखा जिस को, एक पल भर में अपनाया वीर जवाहर ने ॥

(१३) कौमने करवट ली है

मादरे हिंद की तसवीर हो सीनेपै बनी,
बेड़ियां पैरोंमें हों और गले में कफ़नी ।
आज से तेगो वफाका यही जौहर होगा,
फर्श कांटों का हमें फूलों का बिस्तर होगा ।
फूल हो जायेगा छातीपै जो पत्थर होगा,
कैदखाना जिसे कहते हैं वही घर होगा ।
सन्तरी देखा कर उस जोश को शरमाएंगे,
गीत जन्जीर की झनकारपै हम गाएंगे

दिल तड़पता है कि स्वराज्य का पैग़ाम मिले,
कल मिले, आज मिले, सुबह मिले, शाम मिले,
हुक्म हाकिम का है—फरियादे जबानी रुक जाय,
पर यह मुमकिन नहीं यह जोशे जवानी रुक जाय।
हों खबरदार जिन्होंने यह अज़ीयत दी है।
कुछ तमाशा नहीं यह, क़ौमने करवट ली है।

(१४) गांधी

दूर आंखों से हो, यह कब है गवारा गांधी !
बैठते उठते करें तेरा नजारा गांधी !
दिल से, जीसे यही अब कहते हैं दौलत वाले—
है गरीबों की ग़रीबी का सहारा गांधी।
क्या तमाशा यह तमाशा है कि नश्तर बन कर,
उनकी आंखों में खटकता है हमारा गान्धी।
आफ़तें आईं तेरे सर पै बलायें आयीं,
है वतन के लिये सब तुझ को गवारा गांधी।
दिल से जीसे वह हमेशा के लिये दास हुआ,
कर लिया जिसने कभी तेरा नजारा गांधी।
जिस को देखो यही कहता है बड़े दर्द के साथ—
हो गया आज नजर बन्द है प्यारा गांधी।
सारी दुनिया में जमाने में पड़े एक हल चल,
तू जो कर दे किसी जानिब को इशारा गांधी।
कैदखाने को अधेंरे में पड़ा है 'बिस्मिल,

देश भारत का चमकता हुआ तारा गांधी।

(१५) स्वराज्य देखेंगे

कभी वह दिन भी आयेगा कि हम स्वराज देखेंगे,
दयारे हिन्द में फिर हिन्दियों का राज देखेंगे।
छुटेगी कौम अपनी ग़ैर मुल्कों की हुकूमत से,
वतन को अपने ग़ैरों का न हम मुहताज देखेंगे।
गड़गा हिन्द में झण्डा मोहब्बत और मिल्लत का,
दयारे हिन्द में तब हिन्दियों का राज देखेंगे।
न हिन्दी क़ौम पर क़ब्जा रहेगा ग़ैर हाकिम का,
न भारतवर्ष से लेते कभी ख़िराज देखेंगे।
हमेंशा हर घड़ी बच्चे जवां और पीर के दिल में,
वतन के इश्क की उठती हुई आवाज देखेंगे।
मसायब जितने हैं सब दूर होंगे हिन्द वालों के,
संवरते हिन्द के बिगड़े हुए भी काज देखेंगे।
न आने पायेंगी कसरत से मुल्के ग़ैर की चीजें,
न जाता हिन्द से हिन्दोस्तां का नाज देखेंगे।
गरीबों को भी आयेगी मयस्सर पेट भर रोटी,
यतीमों को न दाने दाने का मुहताज देखेंगे।
विजय के हार होंगे नेहरू और गांधी की गरदन पर,
मुकद्दस मादरे भारत के सर पर ताज देखेंगे।
मनायेंगे ज़मीने हिन्द पर हम जशने आज़ादी,
'फ़लक' पर से हमें खुश खुश तिलक महाराज देखेंगे।

(१६) जब अपना राज देखेंगे

उरूजे कामयाबी पर कभी हिन्दोस्तां होगा।
रिहा सैयाद के हाथों से अपना आशियां होगा।
चखा देंगे मज़ा बर्बादिये गुलशन का गुलचीं को,
बहार आ जायगी जिस दम कि अपना बाग़वां होगा।
जुदा मत हो मेरे पहलू से ऐ दर्दें वतन हरगिज़,
न जाने बाद मुर्दन मैं कहां और तू कहां होगा।
शहीदों के मज़ारों पर जुड़ेंगे हर बरस मेले,
वतन पर मरने वालों का यही बाक़ी निशां होगा।
कभी वह दिन भी आवेंगे जब अपना राज देखेंगे,
जब अपनी ही ज़मीं होगी और अपना आसमां होगा।

(१७) लुटिया डुबाना छोड़दो

अब विदेशी माल बाहर से मंगाना छोड़दो।
खासा मलमल डोरिया तन से लगाना छोड़दो॥
क्यों प्रतिज्ञा पत्र पर दस्तख़त किये बे फ़ायदा।
अपने ही हाथों से इज्जत का घटाना छोड़दो॥
सेठ साहूकार हो तुम लक्ष्मी के लाल हो।
हिन्दोस्तां के वासियो लुटिया डुबाना छोड़दो॥
गांधी बाबा का तुमको रहम क्या बिलकुल नहीं।
वह तो खुद दुखिया हैं उनका दिल दुखाना छोड़दो॥
वालण्टियर द्वारे तुम्हारे जान तक दे देयंगे।
सोचो दिल में भाइयो आफ़त का ढाना छोड़दो॥

(१८)

बोलो जय गांधी महाराज ।

चर्खा कातो मिले स्वराज । बोलो जय गांधी महाराज ।
१—घर का कता विलक्षण सूत । कपड़ा है पवित्र मज़बूत ॥
पहिनें सच्चे आर्य्य सपूत । भाग चले फ़ैशन का भूत ॥
हैट बूट से आती लाज । बोलो जय गांधी महाराज ॥
२—धूम स्वदेशी की चहुं ओर । खूब करो चर्खें पर ज़ोर ॥
चलगया अब तो स्वदेशी दौर। बच गये रुपये साठ करोड़ ॥
बिना दामों हो गया इलाज । बोलो जय गांधी महाराज ॥
३—राजा, रय्यत, धनी, फ़क़ीर । सब मिल करो यही तदबीर ॥
जाय न कोई देशी वीर । परदेशी कपड़े के तीर ॥
लौटैं कपड़े भरे जहाज़ । बोलो जय गांधी महाराज ॥
४—छोड़ो परदेशी बू बास । क्यों करते भारत का नाश ?
कब तक बने रहोगे दास ? सारा जगत् करे उपहास ॥
देश-भक्ति का पहिनो ताज । जय बोलो गांधी महाराज ॥
५—शतशः वेश्यन के उत्साह । गाढ़ा पहिन करें निर्वाह ॥
तुम्हें अभी फैशन की चाह । धिक् शिवेन्द्र क्यों करे तबाह ॥
निज-वीरता दिखाओ आज । बोलो जय गांधी महाराज ॥
६—अपनी भाषा अपना वेश । यह स्वराज्य का है संदेश ॥
द्वेष-भाव का रहे न लेश । हो स्वतन्त्र फिर अपना देश ॥
पञ्चम स्वर में एक आवाज़ । बोलो जय गांधी महाराज ॥

चरखे की आरती।

ओं जय जय चरखे !॥

ओं जय चरखे बाबा, ओं जय चरखे बाबा
बस्त्र विदेशी, चक्र सुदर्शन, मानचेस्टर बाबा।
ओं जय जय जय चरखे !॥ १ ॥

भारत त्राता, भाग्य विधाता, तू स्वराज्य दाता ;
पराधीनता नश गई, जब तुझ को काता।
ओं जय जय जय चरखे !॥ २ ॥

दीनन पालन, दुःख मिटावन, भारत भयहारी ;
आत्मा शुद्ध के कर्त्ता, सेवें नर नारी।
ओं जय जग जय !॥ ३ ॥

भारत की है मशीन गन तू है ठण्डा गोला ;
पिडिया की करतूत चली जब, दुःशासन डोला।
ओं जय जय जय चरखे ! ॥ ४ ॥

त्रेता में धनुवान भये और सतयुग में परुषा,
द्वापर में भये चक्र सुदर्शन, कलयुग में चरखा।
ओं जय जय जय चरखे !॥ ५ ॥

श्री चरख की प्रेम से आरति जो कोई गावें,
कहें महात्मा गांधी, सुख सम्पति पावें।
ओं जय जय जय चरखे !॥ ६ ॥

पुस्तक प्रेमियों के हित की बात

हिन्दी-उर्दू पुस्तकों की

जब कभी आपको आवश्यकता हो

तो

हमारे यहां पर पत्र भेज दीजिये

अब आप इधर-उधर-बीसों जगह-से पुस्तकें मंगाकर

व्यर्थ समय और रुपया मत बिगाड़िये

क्योंकि

हिन्दुस्तान में हिन्दी-उर्दू पुस्तकों की हमारी ही

सब से बड़ी दुकान है।

सब प्रकार की, सब विषयों की पुस्तकें मिलती हैं।

व्यापारियों और लाइब्रेरियों को

काफ़ी कमीशन दिया जाता है।

पत्र लिख कर पूछ लें!

मैनेजर :- **सरस्वती आश्रम**

हास्पिटल रोड, अनारकली, लाहौर।